हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री लेखन

(स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लेखिका)

डॉ॰ शिल्पा जिवरग

सहअध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,

शिमला

" ओह, तो मेरा कोई रक्षक नहीं?

नहीं, मैं अपनी रक्षा स्वयं करूँगी।

मैं उपहार में देने की वस्तु,

शीतल मणि नहीं हूँ।

मुझमे रक्त की तरल लालिमा है।

मेरा हृदय उष्ण है और उसमें

आत्म सम्मान की ज्योति है।"

भूमिका –ध्रुवस्वामिनी (जयशंकर प्रसाद)

शताब्दियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई भारतीय नारी को स्वतंत्र बनाकर उसे मानवीय अधिकारों से विभूषित करना, अपने में एक महान साधना है। स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी हमें इस कार्य में निर्णायक सफलता नहीं मिल पायी है। अधिकारों से वंचित, शोषित एवं पीड़ित नारी की अन्तरात्मा की चीत्कार को क्षितिज के आर–पार मुखरित कराने का काम सिर्फ नारी ही कर सकती है, क्योंकि स्त्री हृदय की धड़कन, उसके अवचेतन की मूकता और संघ–आक्रोश की पीड़ा, केवल नारी ही आँक सकती है। इस कारण भारतीय नारी के स्वर, सपने और आकांक्षाओं को अनुभूतिबद्ध करने में जितनी सफलता लेखिकाओं को हासिल हुई है, उसका मूल्यांकन करना भी कम महत्व की बात नहीं है।

सामाजिक जीवन और साहित्यिक विरासत का रिश्ता द्वंद्वात्मक है। समाज के बगैर साहित्य की परिकल्पना असंभव है उसी तरह साहित्य के बगैर समाज की कल्पना असंभव है। साहित्य के माध्यम से

समस्त सांस्कृतिक–राजनीतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन एवं उसके निर्माण की प्रक्रिया का ज्ञान संभव है। इसी तरह स्त्री पुरूष के बगैर समाज की कल्पना संभव नहीं है। स्त्री पुरूष एक दुसरे के पूरक है और एक दूसरे से भिन्न एवं स्वायत्त भी है। सामाजिक विकास की प्रक्रिया में पूरक तत्व पर इस कदर जोर दिया गया कि पुरूष ने स्त्री की अस्मिता एवं सत्ता को ही हजम कर लिया। स्त्री – पुरूष अलग अलग है, इनकी परंपराएं, मूल्यबोध, संवेदनाएं और यथार्थ जीवन की लड़ाईयों के क्षेत्र भी अलग अलग है। सामाजिक जीवन में दोनों की अवस्था असमान और असंतुलित है। ऐतिहासिक विकास के क्रम में स्त्री की स्वायत्त पहचान का लोप हो गया और पहचान के नाम पर सिर्फ शरीर भर रह गया जो उसका नहीं था अपितु वह पुरूष का था। जीवन को संचालित करने वाले संस्थान, कलारूप, नियम, मूल्य और पैमाने सबके सब पुरूष केंद्रित हो गये, स्त्री हाशिए पर थी या निष्क्रिय थी। जीवन–जगत का पर्याय पुरूष था, स्त्री को तो प्रकृति का पर्याय बना दिया गया। लिंगभेदीय असमानता और स्त्री की चौतरफा अनुपस्थिति के माहोल को स्त्री ने अपने संघर्ष, जिजीविषा और परिवर्तन के प्रति गहरी आस्था के जरिए तोड़ा। स्त्री की आज स्वतंत्र अस्मिता है, अनेक क्षेत्रों में उसका दखल बढ़ा है, अनेक अधिकारों को उसने हासिल किया है। इसके बावजूद अनेक क्षेत्र ऐसे भी है जहां स्त्री की अस्मिता आज भी गायब है। ऐसे ही लुप्त क्षेत्रों में से एक है स्त्री साहित्य।

साहित्यकारों के नजरिये से स्त्री की महत्ता–:

सीमोन द बोउआर – " यदि कानून औरतों को बराबरी का आधार दे भी दे तो सामाजिकता, नैतिकता, और लोक व्यवहार उसके आड़े आ जाते है।" आगे फिर लिखती है, " औरत को औरत होना सिखाया जाता है, औरत बनी रहने के लिए उसे अनुकूल किया जाता है।"

महात्मा गांधी– स्त्री को त्याग और तपस्या की मूर्ति मानने वाले महात्मा गांधी जी भी यह कहते है, " जब पत्नी अपने को सही समझे और कोई महत उद्देश्य लेकर पति का विरोध करे तब उसे पूरा अधिकार है कि वह अपने चुने हुए मार्ग पर चले और परिणाम का नम्रता और वीरता के साथ सामना करे।"

राममनोहर लोहिया– " नर– नारी की गैर बराबरी शायद आधार है और सब गैर – बराबरी के लिए या अगर आधार नहीं है तो जितने भी आधार है, बुनियाद की चट्टानें है, समाज में गैर बराबरी की और नाइंसाफी की, उसमें यह चट्टान शायद सबसे बड़ी चट्टान है।"

डॉ॰ बाबासाहेब आंबेडकर– " सामाजिक संघटन का जाति व्यवस्था से ज्यादा अपमानजनक कोई और रूप नहीं हो सकता, यह व्यवस्था लोगों को निर्जीव बनाती है, उन्हें लकवा ग्रस्त करती है, और विकलांग बना देती है और अर्थपूर्ण सक्रियता से दूर रखती है।"

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में होने वाली बहसों में एक महत्वपूर्ण मोड़ स्त्री विमर्श के कारण आया है। साहित्य क्षेत्र में जब महिलाओं की उपस्थिति को कोई अनदेखा नहीं कर सकता। हिन्दी महिला लेखन ने आज हिन्दी साहित्य के केन्द्र बिन्दु से लेकर मुख्य धारा तक जगह बना ली है। वर्तमान समय में बहुत सी महिला कहानीकार समकालीन जीवन दर्शन एवं राजनीतिक मत– मतांतरो से प्रेरित हुये लेखन की ओर अग्रसर है। पश्चिमी संस्कृति साहित्य जीवन– दर्शन और बढ़ती शिक्षा के प्रभाव के कारण महिला रचनाकारों ने नारी से संबंधित नव–नवीन समस्याओं को और संघर्षों को जीवन के अनुभवों से उभरती हुयी सच्चाइयों को निडरता के साथ अपनी कहानियों का विषय बनाया है। उनकी कहानियों में आत्माभिव्यक्ती, आत्मसजगता, मानवीय वेदनाएँ, मानवी संबंधों की खोज देखने मिलती है।

उपेक्षित इंसानी जीवन में गुप्त रहने वाली अपरिचितताओं को खोलना स्त्री–भाषा का पहला काम है। यह साहित्य का कार्य भी है। कहानी हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। इस विधा ने अपने प्रारंभ काल से अब तक बहुत उतार चढ़ाव देखे है। आजादी के बाद कहानी साहित्य नई कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी, समांतार कहानी, साठोत्तरी कहानी या स्वातंत्र्योत्तर कहानी आदि विभिन्न संज्ञा धारण कर कथ्य और शिल्प की दृष्टि से वैविध्यशाली बनी है।

कहानी की यात्रा में स्त्री – लेखन यह अलग – अलग दौर की महिला कथाकारों द्वारा अलग अलग दृष्टियों से देखा, जाँचा–परखा गया और फिर दधि के घृत के समान निकला– स्त्री का वास्तविक स्वरूप। स्वातंत्र्योत्तर काल की नयी पीढ़ी की मानसिकता से पूरी तरह प्रभावित होने के कारण समसामयिक लेखक अपनी लेखनी में नयी मानसिकता और परिवेश दोनों को समाविष्ट करने में सफल हो गये। " आज परिवेश के प्रति प्रतिबद्धता ही वह अपना दायित्व समझता है, इसलिए आज का कहानीकार किसी जीवन – दर्शन विशेष से प्रभावित नहीं है। वस्तुतः गद्य लेखन के क्षेत्र में लेखिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। हिन्दी कहानी की आत्मवत्ता को नया मोड़ देने में और गहरी अर्न्तदृष्टि से उसे चेतनायुक्त बनाने में उन्होंने जो कुछ भी किया है, वह सराहनीय है।

वस्तुतः हिन्दी कहानी के प्रारंभिक स्वरूप का श्रीगणेश बंग महिला नामक लेखिकाओं के हाथों से संपन्न हुआ। उनकी कहानी 'दुलाई वाली' हिन्दी की पहली कहानी मानी भी गयी है। कहानी के क्षेत्र में नारी के आगमन की यह प्रथम पग घ्वनि थी। उसके बाद सैंकड़ों लेखिकाओं ने हिन्दी को समृद्ध एवं सफल बनाया।

" युग युग में नारी बाती बनकर जलती है,

देश, जाति की मानमर्यादा तब तब साँचे में ढ़लती है।"

कभी पुराने समय में लिखी ये पंक्तियां आज के संदर्भ में भारतीय महिलाओं पर पूरी तरह सार्थक होती दिखाई दे रही है। आज भारतीय महिलायें अपने आप को चुनौतियां दे रही है। ज्यादा से ज्यादा स्त्रिया अपने जैसे जीना सीख गयी है। आजादी हासिल कर चुकी है। आजादी पाने का यह रहस्य जानकर कुछ आत्मविश्वासी स्त्रियों ने जब अपने संघर्ष का दरवाजा अपने हाथों से खोला तो इस ओर कोई ऐसे कदम उठ चले, जो बरसों से कहीं दूर अंधेरे में ठिठके हुये थे।

आज के विकसित हो रहे वैज्ञानिक युग में स्थितियाँ तेजी से परिवर्तित होती जा रही है और परिवर्तित हो रहे इस परिवेश में नारी को मानसिक और बौद्धिक विकास के उचित मिल रहे है। " अतः अन्ना कैरनीना और शंकुतला की व्यथा– कथा टॉलस्टाय और कालिदास नहीं स्वयं अन्ना और शंकुतला लिखेंगी। निस्सन्देह सफर बहुत लम्बा है, राह में थकान और घुटन भी है किन्तु झुकना नहीं।"

नारियों के और पुरूषों के लेखने के सम्बन्ध में कुछ अनुभवी लेखिकाओं के विचार इस प्रकार है।

उषा प्रियंवदा– लेखिकाओं का अनुभव संसार सीमित होता है– मुझे लगता है कि यह बात किसी बुरी धारणा से जन्मी है, " स्त्री का अनुभव जगत सीमित होता है। जो कुछ भी मौजूद है, वह वही है जो आज तक साहित्य में बहुचर्चित रहा है, उससे परे उसका कोई दूसरा रूप भी है इसको देखने की इच्छा व्यक्तियों में कभी नहीं होती।

स्नेहमयी चौधरी– " मैं समझती हूँ कि पुरूषों का यह कहना कि लेखिकाओं का अनुभव जगत सीमित होता है, व्यक्तिगत स्तर पर पाया जाने वाला अहं ही है, क्योंकि जब चीज छप कर आती है तो साहित्यिक सौन्दर्य की वस्तु बन जाती है वह रचना स्त्री अथवा पुरूष की नहीं रहती।

महिला लेखिकाओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से नारी सम्बन्धी सदियों पुरानी मिथ को नकारने का प्रयास किया है। क्योंकि इनके नारी पात्र न तो सीता, सावित्री–सी आदर्श मूर्तियाँ है और न ही पुरूषों के हाथों सताई अबलाऐं जो आँचल का दूध और आँखों का पानी दिखाकर पुरूषों के समक्ष सहानुभूति की भीख माँगती है, बल्कि ये काल के क्रूर यथार्थ का बेबाक साक्षात्कार करने और उसे पूर्ण रूप से अपनाने को तैयार नारी पात्र है।

कुछ महिला साहित्यकारों का साहित्य हम देखते है।

1. सूर्यबाला–: सूर्यबाला के अन्दर का कलाकार बचपन से ही जाग उठा था। अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में कहते समय वे अपने बचपन के क्षणों को सबसे पहले सहलाती है। प्रकृति के प्रति प्रेम, प्रकृति का आस्वादन, छुटपन में ही था। शाम की उदासी से बड़ी बेचैनी हुआ करती थी। कहीं उन्होंने लिखा भी है– मेरे कथापात्र की शुरूआत एक उदास बोझिल सी शाम से हुई थी और उस उदास बोझिल शाम की करूणा, अवसाद उनकी रचनात्मकता के साथ अधिक रूप से जुड़ा रहा। उम्र की सीढ़ियों के बढ़ने के साथ उदास शाम की धुँधली और बढ़ती रही। सूर्यबाला कहती है, " मेरी रचनात्मकता के सौरमण्डल में वे अविस्मृत क्षण नक्षत्र हैं जिन्होंने मुझे लाड– दुलार, निस्वार्थ स्नेह और अपनेपन की अपार संपदा सौंपी है। सृजन की प्रेरणा के लिए ऐसे उन क्षणों की ऋणी हूँ। "

सार्थक संकेंतों की लेखिका सूर्यबाला अपने रचनाकर्म को लेकर बहुत ही भिन्न और नूतन विचारों को उजागर करती है। वे कहती है, " मेरे सामयिक जीवन की स्थितियों पर लिखी कहानियों में कंगाल, दिशाहीन, आग फरिश्ते, अग्निपंखी आदि है जिसमें मेरा उद्देश्य मुख्यतः निम्न और मध्यवर्ग को दावानल की तरह निगलती लाचार तंगहाली को व्यक्त करना ही नहीं वरन् उससे उपजी पंगु मानसिकता, जो हमेशा हमेशा के लिए आदमी की अस्मिता को सुखाकर तोड़ती है। उसे दिखाना भी है।

सूर्यबाला जी संस्कार, सभ्यता, आचार– विचार को महत्व देती है। संस्कार को केंचुल की तरह फैंकने में विश्वास नहीं करती क्योंकि वे जीवन के मूल्यों को महत्व देती है। मूल्यों को तिरस्कृत करना अपना मखौल उड़ाने के समान है। मूल्य,परम्परा, संस्कृति का मानव जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध होता है। आज इन्सान इसी के बलबूते जिन्दा है। उनकी कहानियों में अपसंस्कृति, अमानवीयता स्वार्थपरता आदि का सुक्ष्म अंकन हुआ है। मानव मन की गहराई में उतरकर जीवन संघर्षों को परत– दर – परत उधेड़ने वाली सूर्यबाला ने व्यंग्य को भी लेखन में एक औजार के रूप में इस्तेमाल किया है। आज के बदलते युग में बदलते लोगों की हिपोक्रेसी, दिखावा, विकृत रणनीति आदि को दर्शाने के लिए व्यंग्य एक सशक्त माध्यम है। यह व्यंग्य पाठक का मनोरंजन भी करता है और पाठक को सोचने के लिए मजबूर भी करता है।

आपके कहानी संग्रह– इन्द्रधनुष, दिशाहीन, थाली भर चांद, मुंडेर पर, गृहप्रवेश, कात्यायनी संवाद, साँझबाती, इक्कीस कहानियाँ, पाँच लम्बी कहानियाँ, मानुष गंद्य। इस तरह पिछले बीस वर्षों से अपने रचनाधर्म द्वारा हिन्दी कहानी, उपन्यास और हास्य व्यंग्य से युक्त विधाओं में एक प्रतिष्ठित नाम बना पाने में सूर्यबाला जी सफल हुई है।

बालमन की ठुनक हो या कोशार्य मन की उड़ान, नारी मन की झाँकी हो या नर नारी संबंधों की अंतरंगता सबको चित्रित करने में वह समान रूप से सफल हुई है। उनके लेखन के मूल में वह आशावाद सन्निहित है जिसने मानवीय मूल्यों से जुड़ने की प्रेरणा दी है। वे कहती है, " मुझे जीवन बहुत प्रिय है बहुत प्रिय। मैं जीवन के प्रति महामोहग्रस्त हूँ और इस जीवन में मिली तमाम वस्तुओं में इससे ज्यादा आस्था और सम्मान मैं मानवीय सम्बन्धों को देती हूँ। "

2. चन्द्रकान्ता–: स्त्री के अस्तित्व, स्त्री की पहचान, स्त्री की शक्ति और स्त्री से जुड़े तमाम सवालों को खड़ा करनेवाली लेखिका है चन्द्रकान्ता। उनकी साउथ एक्स की सीता कहानी की नायिका ख्याति विवाह हेतु देखने दिखाने की उबाऊ एवं अपमानजनक स्थिति के प्रति आक्रोश व्यक्त करती है। वह दृढ़तापूर्वक कहती है। इस तरह के लोगों के आगे जलील होना यह शादी है या खरीदारी साड़ियों और लड़कियों में कोई फर्क नहीं पाया। सौदेबाजी कितनी शर्मनाक है सदियाँ बितने के बाद भी हम वहीं खड़ें है। चन्द्रकान्ता जी ने जो जीवन के इर्द–गिर्द व्याप्त भयावह स्थितियों को पूरी सच्चाई के साथ व्यक्त करना अनिवार्य मानती है। स्वातंत्र्योत्तर समाज की परिवर्तित परिस्थितियों में बदलते जीवन यथार्थ को पूरी संजीदगी के साथ लेखिका ने अपने कथा साहित्य में उकेरा है। अर्थात उनकी रचनाएँ जीवन की असंगतियों, विसंगतियों, विडम्बनाओं, टकराओं, छटपटाओं, रूग्णताओं के सशक्त दस्तावेज है। स्त्री जीवन के विविध आयामों को नयी सोच व सुबोध परिकल्पनाओं के साथ तराशने में लेखिका सक्षम है। समय के सत्य को प्रस्तुत कर उसे नयी दृष्टि से विश्लेषित करने की दृष्टि बिल्कूल ही अनूठी है।

चन्द्रकान्ता ने अपनी रचनात्मकता को किसी खेमे में बद्ध नहीं किया। समय समय पर होने वाले बहावों, आन्दोलनों से भी वे प्रभावित नहीं हुई। वह लिखती रही अपनी रचनात्मकता को सँवारती रही। साहित्य को वह समय का दस्तावेज मानती है। उनके लिए सृजन अनुभव से सत्य की और भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति है। उनकी रचनाएँ प्रायः सभी अपने अनुभव और भोगे हुए सत्य की जीवन्त तस्वीर है। इसके उदाहरण है 'पोशतूल की वापसी, ' ओ सोनकिगरी', 'तैतीबाई', 'आत्मबोध', 'सिद्धी का करस', 'नुराबाई', पत्थरों के राग', आदि कहानियाँ।

युगीन चिन्तन से अनुप्रणित उनके साहित्य में वैयक्तिकता का निर्बाध प्रवाह उपस्थित है। जीवन की बहुविध भूमिकाओं की समग्रता के अंतरंग में प्रवेश करके उन्होंने जगत के शाश्वत सत्य को उद्घाटित किया है। उनके सृजन से मानव की पीड़ा का दर्द,कराह मुखरित होते है। जीवन दायिनी मूल्यों को वे बहुत महत्व देती है। उत्कृष्ट रचना के प्राणाहुति का अदम्य साहस और सच्चे कलाकार की सौन्दर्य चेतना उनकी कृतियों के उपादान है।

वे खुद कहती है, " हिन्दुस्तान में लड़की होना अत्यन्त कष्टकर है। लेखिका बराबर सतर्क है कि पुरूष एक समर्पिता, एकनिष्ठ व पतिव्रता नारी चाहता है न कि बात–बात पर 'विनेम्य लिब' की याद दिलाने वाली स्वच्छन्द संस्कारहीन नारी। मौन समझौते का स्वीकार यहाँ नारी पत्रों में कम मिलेगा, जिस स्वीकार में स्वतंत्र अस्तित्व को गिरवी रखकर रिश्ते निभाने की सजा भोगनी पड़े, वह स्वीकार यहां अस्वीकार्य है।

3. राजी सेठ– समकालीन लेखिकाओं में राजी सेठ का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। ' अंधे मोड़ से आगे', ' अन्नावृत्त कौन' और ' तीसरी हवेली'। राजी सेठ स्त्री मनोविज्ञान से विशेष रूप से परिचित है। नारी मनोविज्ञान की गहरी पकड़ है। साधारण स्त्री मन को जागृत कर उन्हें अपने अस्तित्व की पहचान कराना भी उनका विशेष लक्ष्य रहा।

राजी सेठ की किसके पक्ष में कहानी का हर निर्णय स्वतंत्र है। जीवन को नये मौलिक एवं स्वतंत्र दृष्टिकोण से देखने की उसमें भयकंर जिद है। जीवन की सान पर चढ़ना उसका विद्रोह पैना अधिक था कुंठित कम। जीवन की अनिवार्यताओं में एकदम रद्दोबद्दल कर देना चाहती थी वह दाम्पत्य में अनिवार्य मान ली गयी। गिलगिली दासताओं के प्रति वह समर्पित नहीं होगी कभी नहीं होगी। उनकी कहानियां एक अलग ताजगी, अभिव्यक्ति और नैसर्गिक छटाओं से भरपूर है।

राजी सेठ की कहानियाँ अंधे मोड़ से आगे, तीसरी हवेली यात्रा मुक्त दूसरा देश काल में, यह कहानी नहीं, सदियों से, किसका इतिहास, गमें हयात ने मारा, खाली लिफाफा, मार्था का देश, यहीं तक राजी सेठ की कहानियां मानव मन की अवस्थाओं का उधेड़बुन करने वाली है। उनकी कहानियों में चित्रित द्वन्द्व आम मानव के मन का द्वन्द्व है। इनकी कहानियाँ चिन्तन प्रधान है। परिवर्तन के अनुसार बदलती हुई परिस्थितियों को समेटने में उनकी कहानियाँ सक्षम है।

4. मैत्रेयी पुष्पा– मैत्रेयी पुष्पा अंचल विशेष को लिखने वाली एक सशक्त लेखिका है। उनकी कहानियों के सशक्त पात्र है। इनके प्रमुख कहानी संग्रह है 'चिन्हार, " गोमा हँसती है", ललमनियाँ', तथा अन्य कहानियाँ। इनकी एक श्रेष्ठ कहानी है 'पगला गयी है भगवती'। इसमें अशिक्षित भगवती आधुनिक शिक्षित स्त्री से ज्यादा सशक्त और प्रतिरोधी तेवर रखनेवाली है। ' रेहन में चढ़ा बुढ़ापा', 'बिकी हुई आस्थाएं', 'कुचले हुए सपने', ' धुंघलाता भविष्य' दर्द की घटनाओं के ताने बाने' से बुनी कहानियाँ है। ये कहानियाँ इक्कीसवी सदी की देहरी पर दस्तक देते हुए भारतीय समाज का परिवर्तित रूप प्रस्तुत करती है। अपना– अपना आकाश की अम्मा, ' चिन्हार की सरजू', ' आक्षेप' की रमिया या 'भंवर' की विरमा सब की अपनी वेदना, अपना दर्द है। जीवन के कराह कसक और घुटन का स्पंदन उनकी प्रायः सभी कहानियों में बिम्बित है। मैत्रेयी पुष्पा ने

जीवन के अनुभूत सत्य को परिवेश के साथ जोड़कर बड़ी ही सहजता और स्वाभाविकता के साथ प्रस्तुत किया है। इस कारण इनकी रचनाऐं जीवन के कड़वे यथार्थ की जीवन्त दस्तावेज है।

5. ममता कालिया– साहित्य की प्रायः सभी प्रमुख विद्याओं में अपने अस्तित्व की छाप छोड़नेवाली लेखिका है ममता कालिया आपके प्रमुख कहानी संग्रह है। ' छुटकारा', 'सीट नं॰ छह', ' उसका यौवन', " पाँच अभी जीरो है", बोलने वाली औरत' आदि। इनके सभी कहानियों में स्त्री समस्या ही प्रमुख है। उनके कहानियों में भावुकता का अतिरेक भी नहीं है और भावुकता का बहिष्कार भी नहीं है। उनकी कहानियाँ मध्मवर्गीय भावबोध से जुड़ी हुई अवश्य है। उनका पहला कहानी संग्रह है 'छुटकारा' जिसमें 14 कहानियाँ संकलित है। कहानियों का फलक छोटा है। ये कहानियाँ दुसरों की जिन्दगी और अनुभवों को लेकर बनायी गयी कहानियाँ नहीं है। ममता कालिया ने अपनी कहानियों में कहीं– कहीं व्यंग्य का संहारा भी लिया है। स्त्री के प्रति परम्परागत रूढ़ दृष्टिकोण वह नकारती जरूर है। इसके साथ वे आधुनिक समाज के पतनशील जीवन मूल्यों को स्वीकारती भी नहीं है। मध्यवर्ग और उसकी समस्याएं ममता कालिया की कहानियों के प्रमुख विषय है। जैसे संयुक्त परिवार का विघटन दाम्पत्य की दरारें, तनाव, अविवाहित नौकरी पेशा लड़कियों की समस्याएँ टूटते हुये पारिवारिक सम्बन्ध आदि।

6. चित्रा मुद्गल – समकालीन महिला लेखन में शीर्षस्थ स्थान पर है चित्रा मुद्गल। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था और उस व्यवस्था में अपमानित हो रही स्त्री की स्थिति और नियति चित्रा मुद्गल को बारबार परेशान करती रही है। वह अपने लेखन, भाषण, विचार गोष्ठियों में यह स्पष्ट करती रहती है कि स्त्री को व्यवस्था से सत्ता नहीं अधिकार चाहिए। वो अधिकार चाहिए। स्त्री मन की पीड़ा को गहराई से महसूस करने के कारण स्त्री की अवस्थाओं का बहुत ही बारीक चित्रण चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य की अपनी विशेषता है। इनके कथा साहित्य में व्यक्ति और समष्टि की विभिन्न इकाइयों के द्वंद्वात्मक अंतः संबंधों को व्यापक अभिव्यक्ति मिली है। उनके लिए दोनों इकाइयाँ अन्योन्याश्रित है। दोनों को वे एक सिक्के के दो पहलू मानती है। उनकी कहानियों का सामाजिक संदर्भ उन्हें अतिरिक्त शक्ति से संपन्न करता है।

स्त्री उनकी कहानियों का मुख्य विषय है। स्त्री पर हो रहे अन्याय, अत्याचार, शोषण स्त्री के स्वयं उच्छृंखल होने की स्थिति को लेकर वे हमेशा व्याकुल होती। वे हमेशा अपनी रचनाओ द्वारा, भाषण द्वारा स्त्रियों को सचेत करती रहती है कि स्त्री को स्वयं अपनी पहचान बनानी है। जरा सी वह फिसल जाये तो पुरुष उसके फिसलन का फायदा उठाता रहेगा। स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में अपनी जीवंत कहानियों के द्वारा अपनी एक विशिष्ट पहचान बनानेवाली लेखिका रही चित्रा मुद्गल

7. मृणाल पांडे– मृणाल पांडे की स्त्री व्यक्तित्व को एक अलग पहचान देनेवाली कहानीकार है। आज स्त्री पुरुष और परिवार के किए वस्तु बनकर रहना नहीं चाहती। वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए किसी भी समय उसे छोड़ भी सकती है। मैं न तो ढँपी रह जाना चाहती हूँ न उघडी जाना । गरदन उठाये सड़क के इस पार से उस पार तक जाना चाहती हूँ। इस तरह से दोपहर में मौत कहानी रिश्तों की दूरी और अलगाव को व्यक्त करती है।

8. नासिरा शर्मा – नासिरा शर्मा प्रगतिशील विचारों की सशक्त लेखिका हैं जो मानवता को धर्म सम्प्रदाय या विचारधारा से उपर मानती है। इसलिए नारीवाद पर बोलते समय भी वह मानवतावाद को महत्व देती है। स्त्रीवाद पर उनके ये विचार इसका सशक्त उदाहरण है– जिस तरह औरत का सशक्तिकरण हुआ है उससे भी एक तरीके से बदलाव आया है। लेकिन देखना यह है कि बदलाव समाज के लिए नकारात्मक है या सकारात्मक। तलाक के मामले बढ़ रहे हैं तो क्या यह ठीक है?

हमें यह भी देखना है कि यह जो कामकाजी तंत्र है वह किस तरह प्रतिभाशाली लड़की को निचोड़ रहा है। पारिवारिक व्यवस्था में स्त्री के सामने यह अजीब सी त्रासदी है कि यदि वह अधिकार लेती है तो रिश्ता टूटता है। रिश्ता रखती है तो अधिकार छूट जाता है।

नासिरा जी के विचार बहुत ही ज्यादा व्यावहारिक है। वह घर में, परिवार में समाज में समन्वय चाहती है। इसी से इंसान विकास को ग्रहण कर सकता है। उनके अनुसार हमारी सामाजिक व्यवस्था की बुनावट बहुत ही उलझन भरी है। स्त्री को उससे निकलना भी चाहिए, नहीं भी निकलना चाहिए। नासिरा शर्मा ने कहानी के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान, बनायी है। कहानी लिखने की कला के बारे में खुद कहती है, – 'मैं जब तीसरी कक्षा में पढ़ती थी तो हमीदिया गर्ल्स कॉलेज में कहानी लेखन में मैंने पुरस्कार पाया । पर उस कहानी का नाम अब याद नहीं है। मैं जब सातवीं कक्षा में पढ़ती थी तो मेरी कहानी राजा भैय्या पत्रिका में प्रकाशित हुई। 1975 में सारिका के नवलेखन अंक में मेरी कहानी बुतखाना और मनोरमा पत्रिका में तकाज प्रकाशित हुई। आपके प्रमुख कहानी संग्रह है, 'बुतखाना', 'खुदा की वापसी, शामी कागज, संगसार, पत्थरगली, डूबते मरियम, दूसरा ताजमहल आदि इस तरह समकालीन अन्य लेखिकाएँ है. अलका सरावगी, कमल कुमार, नमिता सिंह, गीतांजली, श्री मणिका मोहिनी, सिम्मी हर्षिता, कुसूम अंसल आदि ।

समकालिन हिन्दी कथा साहित्य में कितने व्यापक परिणाम और बहुआयामी सन्दर्भ यथार्थ सन्दर्भ में रचे जा रहे हैं। उनमें महिलाओं का योगदान सार्थक है। कुल मिलाकर, इंसान के जीवन को परिपक्वता प्रदान करने की क्षमता लेखिकाओं की रचनात्मकता में है इसमें कोई शक नहीं है। इन लेखिकाओं ने एक

विशेष दृष्टि और गहरे संस्पर्श से जीवन के यथार्थ को उकेरा है। कुछ दबाव डालकर कहे तो कह सकते हैं कि समकालीन लेखिकाओं ने बड़े ही आक्रमक भाव से स्त्री की "अस्मिता, स्त्री की पहचान स्त्री के लिए एक जमीन के लिए अपनी आवाज बुलन्द की है। जो वास्तव में कहीं ज्यादा पुरजोर और असरदार है। अतः 21 वीं सदी महिला रचनाधर्मिता के विस्फोट के रूप में पहचानी जाएगी।

मेरे विचार से–: स्त्री की क्या परिभाषा है? किस तरह स्त्री परिभाषित हो सकती है? यह सोचने की बात है? समाज के कर्त्ता–विधाताओं ने स्त्री के अस्तित्व को खूबसूरत उपनामों से जोड़कर उसे दायराबद्ध किया। स्त्री को इस दायरे से निकलना मुश्किल है। त्याग, सहनशीलता, समर्पण जैसे पुरुष प्रिय गुणों के अवगुंठन में रहने को वह विवश है। शिक्षित और अशिक्षित स्त्रियों की नियती यही है। बहुत कम है जो प्रतिरोध कर अपने अस्तित्व की माँग करती हुई अपने अधिकारों के लिए आगे आती है। ऐसी स्त्रियों की समाज में कोई पहचान नहीं होती पुरुष सत्तात्मक समाज स्त्रियों की उंची आवाज बर्दाशत नहीं करता, उनसे जवाब सुनना पसंद नहीं करता, उनकी समझदारी को स्वीकार नहीं सकता..... इसे क्या कहें?

"जिस देश में दुर्गा के रूप में स्त्री की पूजा होती है उस देश के समाज में स्त्रियों की दुर्दशा का सर्वाधिक विकृत दृश्य देखने को मिलता है। समाज कितने विरोधाभासों से पूर्ण है, एक ओर स्त्री को पूजा का स्थान देकर उसकी आराधना करता है दूसरी तरफ उसे हाशिये पर धकेलने की पहल करता है। स्त्री को अब जागरूक और व्यावहारिक होना ही है। अपनी व्यथा को गोपनीयता से नहीं खुल कर व्यक्त करना है। अपने हक के लिए आवाज बुलंद करना ही है।

निष्कर्ष –: निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि लेखिकाओं ने बड़े ही साहस और आत्मविश्वास के साथ स्वातंत्र्योत्तर कालीन नारी के बदलते स्वरूप को भली–भांति चित्रित किया है। गाँव कस्बें, शहरों, और विदेशों से चुनकर उन्होंने जिन नारियों की कहानी प्रस्तुत की है उसके माध्यम से नारी का वैविद्यात्मक एवं आकर्षक स्वरूप हमारे सामने उभरने लगता है। क्योंकि अस्तित्व की विडम्बना आज की नारी को नारी रहने नहीं देती। यह एक महान सत्य है जिसको सभी कहानियाँ उभार कर सामने रखती है। नारी के बदलते रूपों का आरम्भ और अन्त उसी बिन्दु पर होने लगता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि –

१ नारीः अस्तित्व की पहचान (डॉ. सुधा बालकृष्णन)

२ स्त्रीवादी साहित्य विमर्श – जगदीश्वर चतुर्वेदी

३ स्त्री अध्ययन की बुनियाद – प्रमीला के. पी.

४ स्त्री मुक्ति के प्रश्न – देवेंद्र इस्सार

५ स्त्री विमर्श की उत्तर गाथा – अनामिका –

६ स्त्री विमर्श का लोकपक्ष– अनामिका

७ नारी स्थिति, संघर्ष और चुनौतियाँ डॉ. सीमा सिंह